ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–01
दिनांक– मंगलवार, 02 जनवरी, 2024

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 15.0 एवं 10.1 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 96 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 85 प्रतिशत, हवा की औसत गति 2.2 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 0.7 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 0.0 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 14.6 एवं दोपहर में 19.0 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में मध्यम से घने कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(03–07 जनवरी, 2024)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 03–07 जनवरी, 2024 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल छा सकते है। बेगूसराय के जिला में 6–7 जनवरी के आसपास कहीं कहीं हल्की वर्षा या बूंदा बूंदी हो सकती है तथा अन्य जिलों में आमतौर पर मौसम के शुष्क रहने की सम्भावना है।
- अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान में पूर्वानुमानित अवधि में वृद्धि होने की सम्भावना है जिसके चलते अधिकतम तापमान 18–20 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 10–12 डिग्री सेल्सियस रह सकता है।
- औसतन 2 से 3 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पिछले दो–तीन दिनों से दिन और रात का तापमान, सामान्य तापमान से कम बना हुआ है जिसके कुप्रभाव से बचने के लिए किसान भाई खड़ी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। आलू, गाजर, मटर, टमाटर, धनियाँ, लहसून में झुलसा रोग की निगरानी करें। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व शिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर 2.5 ग्राम डाई–इथेन एम0 45 फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर छिड़काव करें।
- बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो 21 से 25 दिनों की हों गयी हो उसमें सिंचाई कर 30 किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूँ की बुआई के 30 से 35 दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर–पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन 33 ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन 20 ग्रम प्रति हेक्टर दवा 500 लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- गेहूँ की बुआई के 30 से 35 दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर–पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन 33 ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन 20 ग्रम प्रति हेक्टर दवा 500 लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में छिड़काव करें।
- नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई रबी मक्का की फसल जो 55 से 60 दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में 50 किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें। मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुदे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में फोरेट 10 जी0 या कार्बोफ्यूरान 3 जी0 का 7–8 दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन 250–300 मि0ली0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड 48 इ0सी0 / 1 मि0ली0 प्रति 4 ली0 पानी की दर से छिड़काव करे।
- सब्जियों वाली फसल में निकाई–गुड़ाई एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। अगात बोयी गयी मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का 1.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का 3 ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें।
- पिछात बोयी गई आलू की फसल से खरपतवार निकालें एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। आलू में झूलसा रोग की निगरानी नियमित रुप से करें। प्याज की रोपाई पाँक्ति से पाँक्ति की दूरी 15 से0मी0, पौध से पौध की दूरी 10 से0मी0 पर करे।
- तापमान में लगातार गिरावट के कारण दुधारु पशुओं के दूध उत्पादन में आयी कमी को दूर करनें के लिए हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से 50 ग्राम नमक, 50 से 100 ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः 16.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 4.7 डिग्री कम अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 7.4 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.2 डिग्री अधिक

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)